प्रवृत्ति समूह (स)

1. विभिन्न प्रकार के टांके लगाना, कपडों की मरम्मत करना, हुक लगाना, काज बनाना और बटन टांकना।

2. कढाई और फेब्रिक पेंटिंग, कपड़ों पर कलफ लगाना, बाटिक पेंटिंग।

वस्त्रों की सिलाई हेतु विभिन्न टांकों का प्रयोग किया जाता है। कभी–कभी उधड़नें फटने एवं बटन टूटने पर तुरन्त ही मरम्मत की आवश्यकता होती है जिससे वस्त्रों को उपयोग हेतु तैयार किया जा सके। वस्त्रों को सिलने के लिये उपयोग में लाये जाने वाले आधारभूत टांके निम्नलिखित हैं।

1. **कच्चा टांका :–** दो कपड़ों को अस्थायी रुप से जोड़ने के लिये या तुरपाई के लिये कपड़े को व्यवस्थित करने के लिये कच्चे टांके का प्रयोग करते हैं। कच्चे टांके दूर–दूर लगाये जाते हैं। इसके लिये लंबे धागे एवं लंबी सुई का उपयोग किया जाता है। पक्की सिलाई होने पर कच्चा टांका निकाल दिया जाता हैं।

2. **बखिया टांका :–** हाथ की सिलाई का सबसे मजबूत टांका कहलाता हैं। कपड़े के हिसाब से यह छोटा या बड़ा लगाया जाता है। यह टांका दाहिनी ओर से बाई ओर लगाते हुए आगे बढ़ते हैं। बखिया में सुई से एक बार में एक ही टांका लगाया जाता है। टांका बराबर लगाते हुए जहाँ से सुई निकाली गई हो वहीं से एक बार पीछे की ओर सुई निकाल कर आगे बढ़ते हैं जहाँ एक टांका खत्म होता है वहीं से दूसरा टांका शुरु करते हैं।

3. **तुरपाई :–** वस्त्रों की सिलाई के लिये तुरपाई एक आवश्यक टांका हैं। तुरपाई वस्त्रों के मोड़े गये किनारों जैसे स्कर्ट का घेर, मोहरी, गले की पट्टी, बाजू के किनारे आदि पर की जाती है ताकि वस्त्रों पर मशीन के टांके न दिखें। तुरपाई करने के लिये कपड़े के उस स्थान को अच्छी तरह प्रेस करके कपड़ों के किनारों को अन्दर की तरफ अच्छी तरह मोड़ते है ताकि वस्त्र बाहर न निकलें। तुरपाई का टांका हमेशा उल्टी तरफ से लगाते हैं। तुरपाई के वस्त्र को बराबर मोड़ते हुए कपड़े को अपने बाएँ हाथ की उँगलियों में फंसा कर, दायें हाथ में सुई पकड़कर नीचे वाले भाग को लेते हुए उपर की तरफ छोटा टांका निकालते हैं। इस तरह थोड़ी–थोड़ी दूरी पर टांका लगाते हैं। कपड़ें के सीधी तरफ टांके कम दिखाई देने चाहिए। उल्टी तरफ टांका तिरछापन लिये हुए दिखाई देता है।

4. **इन्टरलॉक टांका :–** यह टांका कपड़ों, कम्बल गर्म कपड़ों के किनारों पर सज्जा के लिये तथा वस्त्रों के भीतरी किनारों से रेशों को निकलने से रोकने के लिये परिसज्जा के लिये बनाया जाता है। इस टांके को लूप–स्टिच भी कहते हैं। यह टांका हाथ से बनाते समय बाई तरफ से शुरु करते हुए सुई को कपड़े की परत में डालकर उपर किनारे की तरफ आगे को डालते हुए लूप बनाते हुए निकालते हैं। आजकल मशीन द्वारा भी यह टांका बनाया जाता हैं।

5. **काज–बटन :–** कपड़ों की सजावट एवं फिटिंग के लिये अलग–अलग आकार के बटन लगाये जाते हैं। बटन के लिये काज की आवश्यकता होती है। छोटे बटन के लिये छोटा एवं बड़े बटन के लिये बड़ा काज बनाते हैं।

जहाँ काज बनाना होता है कपड़े के उस भाग को लकड़ी के तख्ते पर रख कर काज के आकार का निशान लगाकर कपड़े को दोहरा कर कैंची से कट लगायें। कटे हुए किनारे पर बारीक कच्चा टांका लगा कर पास–पास लूप टांका बनाते हुए काज भरना शुरु करें। दोनों किनारों पर लूप टांके गोलाई में भरकर काज बनायें।

बटनः– बटन कई प्रकार के होते हैं। कुछ बटन दो छेद वाले और कुछ चार छेंद वाले। बटन हमेशा दोहरी सतह पर मजबूत दोहरे धागे से लगाने चाहिए। काज के अनुसार कपड़े पर पेन्सिल से निशान लगाने के बाद बटन को सही प्रकार जमा कर छेद में से सुई निकालें। कपड़े के निचले हिस्से तक सुई को बाहर निकालना चाहिए। कई बार सुई निकाल कर बटन को मजबूती से लगायें। मजबूती हेतु बटन को सतह से उपर उठा कर बटन के नीचे गोलाई में धागा धुमाकर टांका पक्का करें।

हुक एवं आई :–

हुक :– यह अधिकतर स्त्रियों के कपड़ों की फिटिंग के लिये प्रयोग किये जाते हैं। हुक धातु के बने हुए छोटे एवं बड़े आकार के होते हैं। ये हमेशा पोशाक के दायें भाग की बटन पट्टी पर लगाने चाहिए। जहाँ हुक लगाना है वहाँ निशान लगाकर हुक को निशान पर रखें एवं दोनों ओर के गोल–भाग को सुई द्वारा दोहरे धागे से चार–पाँच बार निकाल कर पक्का करें। फिर मुड़े हुए भाग से धागे को तीन बार निकाल कर पक्का करें।

आई :– आई दो प्रकार से लगाई जाती है। एक धातु से बनी और दूसरी धागे से तैयार की जाती है। धातु से बनी आई को लगाने के लिये निशान पर रखकर छेद से तीन चार बार दोहरे धागे से पक्का कर लें। धागे से आई बनाने के लिये धागे को सुई की सहायता से कुछ दूरी पर तीन चार बार निकालें। फिर उस धागे पर बटन होल (लूप टांके) की सहायता से पूरा बना लें।

कशीदाकारी :– कशीदाकारी वस्त्रों को सुई एवं बहुरंगी धागों से सुसज्जित करने का हस्तशिल्प हैं इसमें अन्य सामग्री यथा :– मोती, तारे–सितारे, चीड़े, सिकवेन्स, कांच इत्यादि का भी प्रयोग कर वस्त्रों को सजाया जाता है। कशीदाकारी साड़ी, सूट, कुर्ती, लहंगे इत्यादि पर की जाती है।

आवश्यक सामग्री :–

1. कपड़ा (सूती, रेशमी इत्यादि)
2. सुई (आवश्यकतानुसार विविध आकार प्रकार की)
3. धागे (विविध रंगों के रेशमी, सूती इत्यादि)

4. डिजाइन
5. डिजाइन की आवश्यकतानुसार तारे, मोती, कांच, चीडे आदि)
6. फ्रेम (आवश्यकतानुसार विविध आकारों के)

प्रविधी :– सर्वप्रथम कपड़े को धो कर प्रेस कर लिया जाता है। उस पर डिजाइन चित्रित कर लिया जाता है या छाप लिया जाता है। इसे उचित आकार के फ्रेम में अच्छे से कस लिया जाता है। फिर डिजाइन की आवश्यकतानुसार विविध प्रकार की कशीदाकारी सुई व धागे की मदद से की जाती है। यह कार्य जितनी सफाई से किया जाएगा उतना ही वस्त्र सुन्दर लगेगा।

कशीदाकारी अनेकों तरीके की प्रचलित हैं, इसके बेसिक तरीकें है– चेन स्टिच, क्रोस स्टिज, बटन होल, रनिंग, लेजीडेजी, जीकजेक इत्यादि।

1. **रनिंग स्टिच :–** रनिंग स्टिज कशीदाकारी में आउट लाईन करने का एक अच्छा तरीका हैं। यह बहुत जल्दी कम समय में हो जाता है। यह कशीदा हाथ की सामान्य सिलाई के समान किया जाता है।

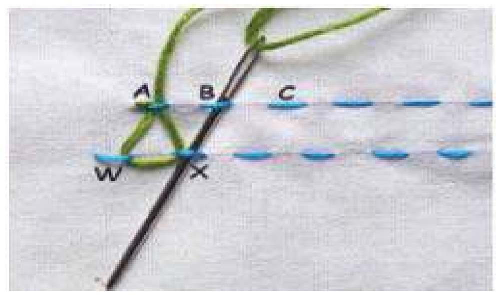

2. **बेक स्टिच :–** बेक स्टिच से बेस लाइने बनती है। यह भी आउट लाइन का ही एक तरीका है।

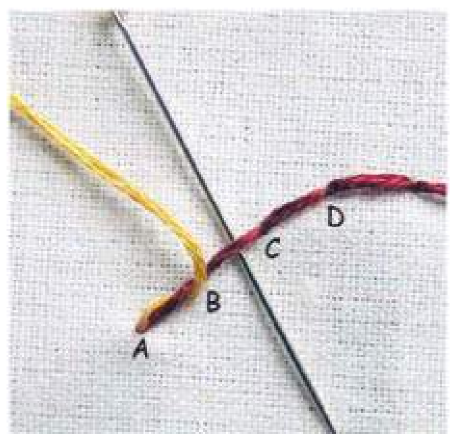

3. **स्टेम स्टिच :–** इस स्टिच का प्रयोग फूलों की डंडियों या टहनियों को बनाने के लिए विशेष रुप से किया जाता है। इससे धुमावदार लाइनें भी आसानी से बनाई जा सकती है।

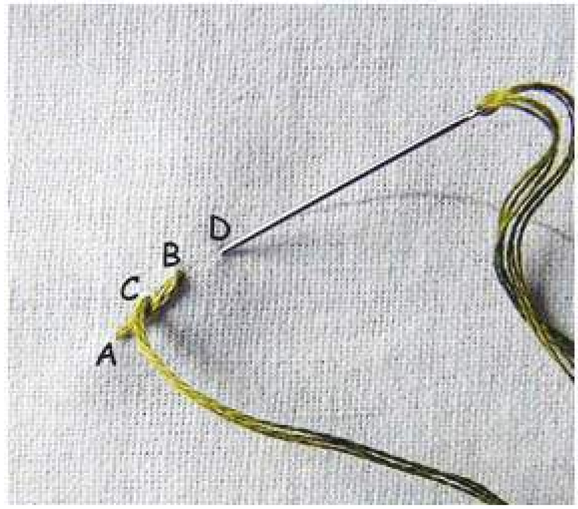

4. **स्टेन स्टिच :–** यह एक अच्छी भरवा स्टिच है, इसमें प्राथमिक टांके के विपरीत ओर से सुई कपड़े में डाली जाती है फिर इसके पास में टांका लगाया जाता है।

फेब्रिक पेन्टिंगः–

फेब्रिक पेन्टिंग छात्राओं एवं घरेलू महिलाओं के लिए बहुत अच्छी हॉबी एवं लघु स्तर पर अर्थप्राप्ति का अच्छा साधन है। इससे छात्राओं में रचनात्मक प्रतिभा का विकास होता है। छात्राऐं साड़ी, सूट अन्य परिधान, बैडशीट इत्यादि को पेन्ट कर सकती है और कपड़ों को एक नया रंग रुप दे सकती है।

फेब्रिक पेन्टिंग हेतु निम्नलिखित बिन्दु उपयोगी होंगे :–
आवश्यक सामग्री :–

1. कपड़ा (सूती, रेशमी,उनी इत्यादि)
2. ब्रश (गोल ब्रश 1,2,4,6 एवं 8 न)

3. फ्रेम (विविध आकारों में)
4. कलर प्लेट
5. पानी की कटोरी
6. डिजाइन
7. रफ कपड़ा (ब्रश साफ करने हेतु)
8. फेब्रिक / एक्रेलिक कलर
9. कलर पतला करने हेतु मीडियम

फेब्रिक व एक्रेलिक कलर रेडी टू यूज एवं धोने योग्य होते हैं।

आजकल इन रंगों की कई किस्में उपलब्ध है यथा– पर्ल कलर, मेटेलिक, ग्लिटर्स इत्यादि। ये रंग किसी भी तरह के कपड़े पर काम में लिये जा सकते है। हमेशा कपड़े को पेन्ट करने से पहले धो एवं प्रेस कर लेना चाहिए।

फेब्रिक डिजाइन के प्रकार – फूलों, ज्यामितीय, परम्परागत, मानव एवं पशु–पक्षी की आकृतियों वाले इत्यादि।

प्रविधी :– सबसे पहले कपड़े को फ्रेम पर कस लिया जाता है। कपड़े पर जो डिजाइन बनाना हो उसे चित्रित कर लिया जाता है अथवा छाप लिया जाता है। प्रारम्भिक स्तर पर सरल डिजाइन बनाए जाते हैं, अधिक अभ्यास होने पर ही जटिल डिजाइन बनाए जाते हैं। इसमें इच्छानुसार या डिजाइन की आवश्यकतानुसार सपाट रंग भरे जाते हैं तत्पश्चात् आवश्यकतानुसार शेडिंग दे दी जाती है। कपडे पर रंगों को अच्छे से सूखने देने के पश्चात् पीछे से प्रेस कर लिया जाता है या कोई पतला कपड़ा उस पर रख कर प्रेस कर लिया जाता है। कपड़े पर फेब्रिक गोंद की मदद से नगीने, तारे–सितारे, मोती, चीडे, कांच इत्यादि भी चिपका कर उसे और अलंकृत किया जा सकता है।

कलफ लगाना :–

लगातार प्रयोग से सूती वस्त्र नरम, मुलायम तथा कांतिहीन हो जाते है। ऐसे कपड़ों को पहनने से व्यक्तित्व में आकर्षण नहीं आ पाता है। अतः वस्त्र में ताजगी, कड़ापन, चमक व आकर्षण लाने के लिये कलफ (स्टार्च) गलाया जाता है। स्टार्च विभिन्न प्रकार के होते है। साधारणतया घरेलू उपयोग में 1. गेहूँ का स्टार्च 2. चावल का स्टार्च (मांड) 3. अरारोट का स्टार्च लिया जाता है।

1. गेहूँ का स्टार्च – मैदा का पेस्ट बनाकर खौलते पानी को लगातार हिलाते हुए पेस्ट को डालें। एक सा श्यान घोल बन जाने के बाद इसमें अधिक जल मिला कर हिलायें।
2. चावल का स्टार्च – चावल को खौलते पानी में पकायें। जब चावल पक कर नरम हो जाये तो इसमें से माँड़ अलग कर लें। माँड में अतिरिक्त जल मिला कर एक समान घोल तैयार करें। इस विधि से स्टॉर्च तैयार हो जाता है लेकिन चावल के पौष्टिक तत्व निकल जाते है।
3. अरारोट का स्टॉर्च – अरारोट का कलफ तैयार करने के लिये इसकी थोड़ी सी मात्रा को जल में

लेकर पेस्ट तैयार करें। अब इस पेस्ट को खौलते हुए जल में डाल कर कलफ तैयार करें। कलफ तैयार करते समय बराबर कलछी से चलाते रहें ताकि गुठली नहीं बने। जब घोल गाढ़ा व पारदर्शी बन जाते तो आवश्यकतानुसार ठंडा पानी मिलाकर प्रयोग करें।

कलफ लगाने की विधि :–

1. उपरोक्त विधि से तैयार घोल को वस्त्र भिगोने जितनी मात्रा में एक बाल्टी लें।
2. वस्त्र की तहों को अच्छी तरह खोल कर तैयार कलफ में एक बार भीतर डुबा कर उपर उठायें। यक क्रिया दोहरायें जब तक कि सम्पूर्ण वस्त्र कलफ से पूरी तरह संतृप्त न हो जाये।
3. वस्त्र को निचोड़ कर सूखने के लिये फैला दें।
4. वस्त्र पर कुछ नमी रहे तभी इस पर इस्तरी कर लें।

बाटिक :–

यह एक प्रकार की अवरोधक रंगाई है। बाटिक कार्य में वस्त्र पर नमूना ट्रेस कर लिया जाता है। डिजाइन के जिस भाग को सफेद (या मूल कपड़े के रंग का) रखना होता है। वहाँ पर मोम लगा दिया जाता है। मोम को पिघला कर ब्रश से गर्म मोम की तह लगाते हैं व इसे सुखा लेते हैं। कपड़े को रंग के घोल में डुबोते है। जिससे मोम लगे स्थान को छोड़ कर शेष स्थानों पर रंग चढ़ जाता है। मोम के सूखने व वस्त्र के रंगने के दौरान मोम की तह जगह–जगह से चटक जाती है जिससे इन जगहों पर भी रंग चढ़ जाता है। अब वस्त्र को सुखाकर पहले की तरह दूसरे रंग के लिये पुनः मोम लगाकर वस्त्र को रंगते है। वस्त्र को हमेशा हल्के रंग से गहरे रंग की ओर रंगा जाता है। पूरी तरह सूख जाने पर वस्त्र को गर्म पानी में डुबो कर मोम हटा लिया जाता है। इस प्रकार विविध रंगों से रंगा आकर्षक वस्त्र तैयार हो जाता है।

अभ्यास प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1.दो कपडो को अस्थायी रूप से जोडने के लिए प्रयोग किया जाता है–

(अ) बखिया टाँका (ब) कच्चा टाँका (स) इन्टरलॉक (द) तुरपाई

2.उल्टी तरफ से लगाया जाने वाला टाँका है–

(अ) बखिया टाँका (ब) कच्चा टाँका (स) काज (द) तुरपाई

3.वस्त्रों को कड़क एवं चमकदार बनाने के लिए लगाया जाता है–

(अ) मोम (ब) कलफ (स) पेंट (द) कढाई

4. माँड होता है–

(अ) गेहूँ का स्टार्च (ब) अरारोट का स्टार्च (स) चावल का स्टार्च (द) उपरोक्त सभी

5. बाटिक पेंटिग में अवरोध के रूप में उपयोग होता है–

(अ) मोम (ब) स्टार्च (स) रंग (द) खडिया

लघुत्तरात्मक प्रश्न–

1.कपडों की आन्तरिक किनारे से रेशे निकलने से रोकने के लिए कौन सा टाँका उपयोग करते हैं?

2.कशीदाकारी के मुख्य टाँकों के नाम लिखिये।

3.बाटिक पेंटिग की विधि बताईए।

निबंधात्मक प्रश्न–

1.कलफ कितने प्रकार के होते हैं? कलफ लगाने की विधि का वर्णन कीजिए।

2.बैडशीट पर फेब्रिक पेंटिग की विधि का वर्णन कीजिए एवं एक आकर्षक डिजाइन बनाईये।

उत्तरमाला (वस्तुनिष्ठ)

1 (ब) 2(द) 3 (अ) 4. (स) 5. (अ)